



ॐ क  
नमः  
शिवाय

**राजकीय श्रावणी मेला**  
में सभी श्रद्धालुओं और कांवरियों का

**हार्दिक अभिनंदन**  
**और जोहार**

भगवान भोलेनाथ सभी भक्तों  
की मनोकामना पूर्ण करें

PRNO 301304 (IPRD) 23-24

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, झारखण्ड सरकार



**हेमन्त सोरेन**  
मुख्यमंत्री, झारखण्ड







न्यूज डायरी

**वज्रपात की चपेट में आने से दो की मौत**

लातेहार। बालुमाथ थाना क्षेत्र में सोमवार को दो अलग-अलग स्थानों पर वज्रपात में हृदय गंड़ु (50) और भोला यादव (35) की मौत हो गयी। जबकि महेश गंड़ु गंभीर रूप से घायल हो गया।

**17-18 को बैंगलुरु में विपक्षी दलों की बैठक**

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि मोदी सरकार के खिलाफ विपक्षी दलों की अगली रणनीतिक बैठक 17 और 18 जुलाई को कर्नाटक की राजधानी बैंगलुरु में होगी। कांग्रेस महासचिव संगठन केसी वेणुगोपाल ने यह जानकारी दी।

**पलामू में पूर्व डीएसपी की पुत्री का शव बरामद**

भेदिनीनगर। शहर थाना क्षेत्र के बाईपास रोड सिंचाई विभाग के सामने तालाब से रविवार को युवती का शव बरामद हुआ। तालाब से 500 मीटर की दूरी पर बारालोटो चैंपियन चौक में युवती अपने भाई के साथ फिराये के मकान में रहती थी। उसकी पहचान पूर्व डीएसपी स्व भिखारी राम की पुत्री कंचन कुमारी (45) के रूप में हुई है।

**राहुल गांधी की याचिका पर आज होगी सुनवाई**

रांची। रांची के एमपी-एमएलए कोर्ट से कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी को हाजिर होने के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर झारखंड हाई कोर्ट में मंगलवार को सुनवाई होगी। राहुल गांधी का मामला मंगलवार को जस्टिस संजय कुमार द्विवेदी की बेंच में सुचीबद्ध किया गया है।

**अमोद नारायण सिंह बने जर्मुंडी के डीएसपी**

रांची। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसबी) रांची में डीएसपी के पद पर पदस्थापित अमोद नारायण सिंह को स्थानांतरित करते हुए अगले आदेश तक दुमका जिले के जर्मुंडी के डीएसपी के पद पर पदस्थापित किया गया है।

**धारदार हथियार से पति-पत्नी की हत्या**

पश्चिमी सिंहभूम। कराईकेला थाना क्षेत्र में अपराधियों ने धारदार हथियार से पति-पत्नी की हत्या कर दी। हत्या के कारणों का अब तक पता नहीं चल पाया है। डायन और जमीन विवाद में हत्या की आशंका है। पुलिस जांच में जुट गयी है।

**मनीष सिंसोदिया की जमानत याचिका खारिज**

नयी दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी की शराब नीति-2021-22 (जो बाद में रद्द कर दी गयी थी) में कथित अनियमितताओं से जुड़े घन शोधन मामले में दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिंसोदिया एवं अन्य की जमानत याचिका सोमवार को खारिज कर दी।

**मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग**

नयी दिल्ली। युवा कांग्रेस ने मणिपुर की हिंसा पर पीएम नरेंद्र मोदी की खामोशी के विरोध में आज यहां प्रदर्शन किया और राज्य सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की।

**मणिपुर के ताजा हालात का विवरण देने का निर्देश**

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मणिपुर में जातीय हिंसा के मामले में राज्य सरकार को हालात का ताजा विवरण प्रस्तुत करने को कहा। वह इस मामले में अगली सुनवाई 10 जुलाई को करेगा।



**गड्डा आभूषण**  
बोना (बिक्री) : 55,400 ₹/10 बाज  
वांछी : 72,000 ₹ प्रति किती

# मंत्रोच्चार के साथ ऐतिहासिक श्रावणी मेले का शुभारंभ

## शिव भक्तों के स्वागत को बाबानगरी तैयार, मेला का उद्घाटन कर कृषि मंत्री ने की राज्य की सुख-समृद्धि की कामना

**खबर मन्त्र संवाददाता**

देवघर। विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजकीय श्रावणी मेला का मंत्रोच्चारण के साथ सोमवार को शुभारंभ हो गया। मंगलवार से श्रावण मास शुरू हो रहा है। भारत समेत नेपाल और भूटान तक से श्रद्धालु बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक करने के लिए देवघर आते हैं। सोमवार को देवघर और बिहार के बांका जिले की सीमा पर स्थित दुम्मा में झारखंड के कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के मंत्री बादल पत्रलेख ने मेले का उद्घाटन किया।

मेला का विधि-विधान पूर्वक शुभारंभ कराने के लिए 11 वैदिक पुरोहितों ने बाबा बैद्यनाथ की पूजा

**मलमास के कारण दो महीने चलेगा मेला**

इस वर्ष मलमास को लेकर दो महीने तक सावन होगा। इस दौरान दो बार 15-15 दिनों के लिए मेले का आयोजन किया गया है। बीच में पड़ने वाले मलमास के महीने में मेला का आयोजन नहीं होगा। इसकी तैयारी जिला प्रशासन ने पूरी कर ली है। सोमवार को गुरु पूर्णिमा होने के कारण मंदिर प्रांगण में भी चांवरियों की भारी भीड़ रही।

को। मंदिर में पूजा-अर्चना कर झारखंड की खुशहाली की कामना की।

(शेष पेज 11 पर)



## पहाड़ी मंदिर में महादेव की दिव्य आरती

**राज्यपाल ने बेबी देवी को दिलायी मंत्री पद की शपथ**

# शपथ लेते ही संभाल लिया उत्पाद विभाग का कार्यभार

**खबर मन्त्र ब्यूरो**

रांची। शिक्षा मंत्री रहे स्व. जगन्नाथ महतो के निधन के 88वें दिन बाद उनकी पत्नी बेबी देवी ने सोमवार को झारखंड में 11वें मंत्री के रूप में शपथ ली। उन्हें राजभवन के दरबार हॉल में राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी। समारोह में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन समेत कई नेता और मंत्रियों ने हिस्सा लिया। शपथ ग्रहण के तुरंत बाद मंत्री बेबी देवी महतो को उत्पाद विभाग आवंटित कर दिया गया।

मंत्री बनावे जाने के साथ ही राजभवन से निकलकर बेबी देवी अपने विभागीय सचिव वनय कुमार चौबे और राज्य के निबंधन मंत्री हफिजुल हसन, झामुमो विधायक सुदिव्य कुमार सोनू और कांग्रेस विधायक अनूप सिंह तथा अपने बेटे राजू के साथ उत्पाद भवन पहुंची



**मुख्यमंत्री समेत सभी ने दी बधाई :** राज्य के मुख्य सचिव सुखदेव सिंह ने राज्यपाल की अनुमति से सविधान की धारा 164 (1) के हवाले से शपथ ग्रहण के लिए वारंट पढ़ा। राज्यपाल के प्रधान सचिव नितिन मदन कुलकर्णी ने बेबी देवी को शपथ ग्रहण के लिए आमंत्रित किया। राज्यपाल ने राजभवन स्थित दरबार हॉल में बेबी देवी को झारखंड मंत्रिमंडल के सदस्य के रूप में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी। शपथ ग्रहण के बाद मुख्यमंत्री और अन्य गणमान्य लोगों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मौके पर बेबी देवी महतो ने कहा कि वह अपने स्व पति के अधूरे सपनों को पूरा करेंगी। शपथ ग्रहण से पूर्व उन्होंने गुरुजी शिवू सोरेन का आशीर्वाद भी लिया।

और विभाग में कार्यभार जाकर मां के दर्शन किये और संभाला। शपथग्रहण के पहले आशीर्वाद भी लिया।

उन्होंने मां छिन्न मस्तिका मंदिर (शेष पेज 11 पर)

**लैंड फार जॉब घोटाले में लालू परिवार की बढ़ी मुश्किलें**

# सीबीआइ ने तेजस्वी यादव के खिलाफ चार्जशीट दायर की

**एजेंसी**

नयी दिल्ली, पटना। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट में लैंड फॉर जॉब घोटाला मामले में आरोपी के तौर पर शामिल है। लालू प्रसाद और राबड़ी देवी के खिलाफ पहले ही सीबीआई चार्जशीट दायर कर चुकी है। दरअसल, सीबीआई की ओर से कोर्ट में कहा गया था कि वह कोर्ट की छुट्टी के बाद अपना पूरा आरोप पत्र दाखिल करेगी, जिसके बाद कोर्ट की ओर से कहा गया कि इस मामले में अगली सुनवाई 12 जुलाई को होगी। अदालत ने सीबीआई से कहा था कि

एजेंसी की ओर से मामले में लगातार देरी स्वीकार्य नहीं है। इस पर सीबीआई ने जवाब दिया था कि इस मामले में अभी भी जांच चल रही है और उन्हें नए तथ्यों को शामिल करने के लिए कुछ और समय चाहिए, जिसके बाद सोमवार को सीबीआई ने चार्जशीट दाखिल की है। राजद सुप्रिमो लालू प्रसाद यादव के रेल मंत्री रहते जमीन लेकर नौकरी देने के मामले में तेजस्वी यादव पर चार्जशीट दायर किया गया है। इस मामले में लालू यादव और राबड़ी देवी के खिलाफ पहले ही चार्जशीट दायर किया जा चुका था। सीबीआई ने अब तेजस्वी यादव समेत दूसरे लोगों को भी अभियुक्त बनाते हुए चार्जशीट दायर किया है। तेजस्वी यादव पिछले दिनों इस बात की आशंका जाहिर की थी। (शेष पेज 11 पर)

# कोडरमा, दुमका में भारी बारिश से रेल सेवा अस्त-व्यस्त

## बासुकीनाथ में पटरी डूबी, कोडरमा में नीलांचल समेत कई ट्रेनों हुई प्रभावित

**खबर मन्त्र टीम**

दुमका, कोडरमा। दुमका और कोडरमा जिले में भारी बारिश का असर रेल परिचालन पर भी पड़ा है। भारी के कारण दुमका के बासुकीनाथ रेलवे स्टेशन की पटरी पानी में डूब गयी। इससे दुमका-जसीडीह पैसेंजर ट्रेन लगभग 45 मिनट खड़ी रही। पटरी पर से पानी तरने के बाद ही ट्रेन रवाना हुई। इससे यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं गया-कोडरमा रेलखंड के घाट सेक्शन के बसकटवा स्टेशन में आनंद विहार-पुरी नीलांचल एक्सप्रेस

**45 मिनट तक खड़ी रही दुमका-जसीडीह पैसेंजर**

दुमका जिले में भारी के कारण बासुकीनाथ रेलवे स्टेशन की पटरी पानी में डूब जाने से दुमका-जसीडीह पैसेंजर ट्रेन लगभग 45 मिनट खड़ी रही। ट्रेन रुकने से यात्रियों को काफी परेशानी हुई। दरअसल, जिले में सुबह से लगातार बारिश हो रही थी। जिसका असर बासुकीनाथ रेलवे स्टेशन में देखने को मिला। पटरी पर पूरी तरह से पानी से भर गया। इस मामले पर दुमका के स्टेशन प्रबंधक टीपी यादव ने बताया कि दुमका-जसीडीह पैसेंजर ट्रेन दुमका से समय पर खुली थी, लेकिन भारी बारिश की वजह से बासुकीनाथ स्टेशन में पटरी पर पानी जमा हो गया। इस वजह से ट्रेन 45 मिनट तक वहीं खड़ी रही। बाद में जैसे ही पटरी पर पानी कम हुआ, ट्रेन को रवाना कर दिया गया।

(12876) रुक गयी। अत्यधिक अधिकारी रेस हुए। नीलांचल एक्सप्रेस के रुक जाने के कारण कुछ ट्रेनों को जहां-तहां खड़ा करना पड़ा, जबकि डाउन लाइन पर परिचालन तीन घंटे बाधित रहा।

रेल सुत्रों के अनुसार रविवार रात 3:35 बजे हुई भारी बारिश की वजह से आनंद विहार-पुरी नीलांचल एक्सप्रेस गया से रात 2:55 बजे खुलने के बाद घाट

सेक्शन के बसकटवा स्टेशन के पास पहुंची। यहां काफी बारिश के कारण किलोमीटर 417/12 के पास 3:35 बजे ट्रेन रुक गयी। (शेष पेज 11 पर)

**उसरी नदी की तेज धार में तीन बहे, दो के शव मिले**

गिरिडीह। मुफस्सिल थाना क्षेत्र स्थित उसरी नदी में सोमवार सुबह तीन युवक बह गये। एक ने तैर कर किसी तरह अपनी जान बचायी पर दो युवकों की मौत हो गयी। हजारीबाग निवासी मनीष कुमार का शव दोपहर बाद मेट्रोस गली स्थित अरगाघाट नदी से बाहर बरामद हुआ। इससे कुछ घंटे पहले ही आनंद का शव भी अरगाघाट नदी के दूसरे छोर से बरामद हुआ था। दोनों युवकों के साथ रहे एक अन्य युवक शंकर ने तैरकर अपनी जान बचायी। रविवार रात हजारीबाग के तीन युवक शंकर, मनीष और आनंद बंगाबाद से हजारीबाग जा रहे थे। गुगल मैप के सहारे रास्ता खोजते हुए वे नया पुल के समीप पहुंच गये। जहां तीनों को अवेध जाने के लिए कोई रास्ता नहीं मिला। तभी नया पुल बनते देख शंकर बाइक से उतरा और नदी में उतर कर पानी की धारा नापने लगा।

# इडी पूछताछ में दिनेश गोप का टालमटोल जवाब

## टेरर फंडिंग मामला

**खबर मन्त्र ब्यूरो**

रांची। झारखंड के मोस्ट वांटेड नक्सली और प्रतिबंधित नक्सली संगठन पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएलएफआई) के सुप्रिमो को दिनेश गोप उर्फ कुलदीप यादव उर्फ बड़कू से मनी लांडिंग के मामले में इडी जेल पहुंची। जेल में दिनेश गोप से लगभग पांच घंटे तक पूछताछ हुई, हालांकि, दिनेश गोप ने फंडिंग के मामले में इडी के द्वारा पूछे गए प्रश्न पर टाल मटोल जवाब दिया। एनआईए पट्टी थ्री पीछे: एनआईए ने बताया कि गोप अपने सहयोगियों के साथ एक पेट्रोल पंप पर एक बैंक खाते में नोटबंदी के बाद अवैध नोटों को जमा करने में शामिल था। ये नोट लेवी और जबरन वसूली से एकत्र किये जाते थे। इस अवैध धन को बैंकिंग चैनलों और संधिध शेल कंपनियों के माध्यम

**संथाल में अब नहीं होगा बिजली संकट : मुख्यमंत्री****संथाल में अब नहीं होगा बिजली संकट : मुख्यमंत्री**

सीएम ने कहा कि दुमका एवं देवघर जिला में बिजली की जो कमी आ रही थी, अब वहां निर्बाध बिजली सप्लाई हो सकेगी। 80 मेगावाट अतिरिक्त बिजली मिलने से इन क्षेत्रों के लाखों लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होंगे। कहा कि देवघर एवं दुमका जिले में बाबा बासुकीनाथ एवं श्रावणी मेला के शुभारंभ के साथ इस महत्वपूर्ण समय में यहां पावर ग्रिड सब-स्टेशन का भी शुभारंभ हो रहा है। यह ग्रिड सब-स्टेशन आज से यहां की जनता की सेवा के लिए कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि बिजली ग्रिड सब-स्टेशन, मकान के पिलर की तरह होता है। ग्रिड सब-स्टेशन बनने से बिजली सप्लाई में आ रही रुकावट और लो वोल्टेज की समस्या का समाधान किया जा सकेगा।

100 युनिट बिजली मुफ्त दे रही सरकार : श्री सोरेन ने कहा कि उनकी सरकार बेहतर बिजली आपूर्ति के साथ वसे उपभोक्ता परिवार जिनकी मासिक खपत 100 युनिट से कम है उन्हें मुफ्त बिजली उपलब्ध करा रही है। हमारी सरकार जनकल्याण एवं संवेदनशीलता के साथ कार्य कर रही है। बिजली बिल बकायेंदार परिवारों को किरतों में बिल चुकाने का भी प्रावधान राज्य सरकार ने किया है। उन्होंने समारोह स्थल पर उपस्थित लोगों से अपील की कि बेहतर एवं गुणालक बिजली सेवा बहाल करने में जनमानीदारी निमायें।

प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है राज्य सरकार : कृषि मंत्री बादल पत्रलेख ने कहा कि दुमका एवं देवघर जिला के लिए आज विशेष दिन है। आज इस परियोजना का शुभारंभ राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सीएस के नेतृत्व में राज्य में निर्बाध बिजली आपूर्ति के क्षेत्र में निरंतर ऐतिहासिक काम किया जा रहा है।

सब-स्टेशन अलग-अलग ग्रिडों से भी जुड़ेगा। बिजली की महत्ता से आज कोई भी अपरिचित नहीं है।

सोनारायथाडी आदि में बिजली की समस्या से लोगों को छुटकारा मिलेगा। आने वाले समय में यह ग्रिड

# सुमो ने आदिवासियों को यूसीसी से बाहर रखने की वकालत की

**एजेंसी**

नयी दिल्ली। भाजपा सांसद सुशील कुमार मोदी (सुमो) की अध्यक्षता में सोमवार को संसदीय समिति की बैठक हुई। बैठक में सुमो ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) बनने की स्थिति में पूर्वोत्तर एवं अन्य क्षेत्रों के आदिवासियों को इसके दायरे से बाहर रखने की वकालत की। वहीं, कुछ विपक्षी दलों के सदस्यों ने इस विवादित मुद्दे पर विचार-विमर्श शुरू करने के विधि आयोग के कदम पर सवाल उठाया। बैठक में कांग्रेस, द्रमुक सहित ज्यादातर विपक्षी दलों के सदस्यों ने यूसीसी पर जोर दिये जाने को अगले लोकसभा चुनाव से जोड़ा। बैठक में शिवसेना सांसद संजय राउत ने

**संसदीय समिति की बैठक**

कहा कि कई देशों में समान नागरिक संहिता है और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों एवं समुदायों की चिंताओं पर भी ध्यान देने को कहा। कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा और द्रमुक सांसद पी विल्सन ने यूसीसी पर लोगों और अन्य हितधारकों से सुझाव आमंत्रित करने के विधि आयोग के कदम पर सवाल उठाते हुए अलग-अलग लिखित बयान सौंपा। तन्खा और विल्सन ने कहा कि परिवार कानून में सुधार को लेकर 31 अगस्त 2018 के विधि आयोग के परिचर्चा पत्र को देखा है और इसमें यूसीसी को इस स्तर पर न तो जरूरी और न ही वांछनीय बताया गया है।



# शिक्षा विभाग पीटीटीसी को खेल प्रशिक्षण केंद्रों में अपग्रेड करेगा

संजीव मिश्रा

रांची। स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसजीएफआई) में झारखंड के खिलाड़ियों के बेहतर प्रदर्शन से सरकार काफी उत्साहित है। झारखंड शिक्षा विभाग चार प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (पीटीटीसी) को खेल प्रशिक्षण केंद्रों में स्थापित करेगा। विभाग ने इसके लिए वर्क ऑर्डर जारी कर दिया है। बुंदू (रांची), सतबरवा, चाईबासा और देवघर में पीटीटीसीएस तैयार किया जा रहा है, जिसमें खिलाड़ियों के लिए कैंप लगाये जायेंगे। इन केंद्रों में आवासीय सुविधा के साथ शुरूआत की जाएगी। शिक्षा सचिव के रवि कुमार के



निर्देश पर यह पहल की जा रही है। हाल ही में खिलाड़ियों ने अक्टूबर में ही, झारखंड की ओर से एसजीएफआई अंडर-19 खेल प्रतियोगिता की विभिन्न स्पर्धाओं में 14 पदक जीते हैं। यह पहली बार है कि शिक्षा विभाग के नेतृत्व में झारखंड की टीम इस प्रतियोगिता में

मैदान में उतरी। अब पीटीटीसी को आने वाले वर्षों के लिए तैयार किया जा रहा है। इन पीटीटीसी का जीर्णोद्धार कर सितंबर माह तक तैयार कर लिया जायेगा। उम्मीद है कि सितंबर से प्रशिक्षण शिविर शुरू हो जाएगा। खेल विभाग की ओर से ऐसे शारीरिक शिक्षकों की सूची

## शिक्षा सचिव के. रवि कुमार ने कहा

आने वाले दिनों में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र बंद किया जायेगा। इस लिए इन केंद्रों को खेल प्रशिक्षण केंद्र के रूप में अपग्रेड किया जा रहा है। इस केंद्रों पर हर तरह के खेलों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। उम्मीद है कि सितंबर से प्रशिक्षण शिविर कि शुरूआत हो जायेगा। इन पीटीटीसी में साल भर कैंप लगाये जायेंगे।

तैयार की जा रही है, जो अपने-अपने खेल में माहिर भी हैं। खिलाड़ियों की ट्रेनिंग में उनकी मदद ली जाएगी।

आवासीय प्रशिक्षण के लिए किया जायेगा चयन खेले झारखंड और एसजीएफआई खेल में बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों का चयन आवासीय प्रशिक्षण के लिए किया जायेगा। इस दौरान छात्रों का स्थानीय जैक बोर्ड

स्कूलों में नामांकन भी कराया जायेगा। ताकि उनकी पढ़ाई बाधित न हो। हाल ही में शिक्षा विभाग ने एसजीएफआई खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए खेले झारखंड प्रतियोगिता के प्रारूप में भी बदलाव किया है। इसके तहत अब एसजीएफआई की तर्ज पर अंडर 14, 17 और 19 कैटेगरी में 18 खेलों का आयोजन किया जाएगा।

## रांची विवि : स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में मनी गुरु पूर्णिमा



खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में सोमवार को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर संगोष्ठी आयोजित की गयी। जिसमें प्रो अर्चना कुमारी दुबे (मानविकी संकाय प्रमुख तथा अध्यक्ष संस्कृत विभाग) ने दीप प्रज्वलन कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया। गुरु की महत्ता को व्यास के जन्मदिन से जोड़ते हुए सारगर्भित शब्दों में छात्रों के निरंतर उन्नति का संदेश दिया। विभाग के अन्य प्राध्यापकों ने भी अपने मधुर एवं ज्ञानवर्धक सुवचन से छात्रों को

आशीर्वाद प्रदान किये, डॉ मधुलिका वर्मा ने कहा शिष्यों में भी देवत्व होता है। डॉ उषा टोप्पो, डॉ प्रकाश सिंह, डॉ भारती द्विवेदी, डॉ घोषाल, डॉ राहुल कुमार, डॉ जगदंबा प्रसाद सभा में उपस्थित हुए। शोधार्थियों में धर्मवीर आर्य, जगन्मय विश्वास, मुरारी मंडल, कोयल दास तथा चतुर्थ समसत्र एवं द्वितीय समसत्र के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे। सभा का संचालन स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग के द्वितीय समसत्र के विद्यार्थी करिश्मा तथा रंजीत ने किया। छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये।

## श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर मंदिर में गुरु पूर्णिमा पर्व आयोजित

खबर मन्त्र व्यूटो

रांची। श्रीगुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रीकृष्ण द्वैपायन वेदव्यास जयंती उत्सव के उपलक्ष्य पर श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर मंदिर में सोमवार को श्रीगुरु पूर्णिमा पर्व विधिवत मनाया गया। प्रातःभक्त्युत्सव स्तुति, भोग और महा आरती हुई। तदनंतर श्री संप्रदायानुचार्य श्रीरामानुज मत के समस्त पूजाचार्यों की समारोधान आरती एवं वैकुण्ठवासी अनंत श्रीविभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य श्रीस्वामी भगवान दासाचार्य जी मंत्रार्थ के कृपा प्राप्त श्रीस्वामी अनिरुद्धाचार्य महाराज के चित्रपट को फूल मालाओं से सजावट



करके धूप, दीप, गंध तुलसीदल एवं नैवेद्य आदि से भक्तों और शिष्यों की विशिष्ट उपस्थिति में विधिवत मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर संचालन समिति के कार्यकारी अध्यक्ष राम अवतार नारसरिया के हाथों संस्कृत पूर्वक पंडित श्यामानंद झा ने अनुष्ठान के सारे कार्यक्रमों को विधिवत संपन्न कराया। मंदिर के अर्चक-

सत्यनारायण गौतम, गोपेश आचार्य और नारायण दास का सहयोग रहा। गुरुपूजन में मुख्य रूप से रामअवतार नारसरिया, अनूप अग्रवाल, रंजन सिंह, रामवृक्ष साहू, गौरीशंकर साबू, सुशील लोहिया, विमला शर्मा, नीरू फोगला, सुशील गाड़ोइया के अतिरिक्त सैकड़ों शिष्यों भक्तों ने हिस्सा लिया।

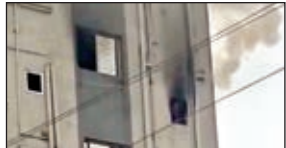
## श्रद्धालुओं का जत्था अमरनाथ रवाना

रांची। स्वर्ण जयंती ट्रेन से दर्जनों की संख्या में बाबा बर्फानी के दर्शन के लिये श्रद्धालुओं का जत्था सोमवार को रवाना हुआ। भाजपा नेता संजय कुमार जयसवाल ने सभी अमरनाथ यात्रियों को टीका लगाकर अंग वस्त्र ओढ़ा कर अमरनाथ यात्रा के लिए रवाना किया। उन्होंने बताया कि जय बाबा बर्फानी ग्रुप मनोज कुमार जायसवाल के नेतृत्व में लगातार 30 वर्षों से सुखदेव नगर लालकोठी रातू यात्रा के लिए रवाना होते रहे हैं। श्रद्धालुओं में मनोज कु जयसवाल, प्रभु सोनी, आलोक कुमार, अजीत कुमार, राजीव



कुमार सिंह, आनंद सोनी, भोला मुंडा, विजय मिश्रा, रितेश्वर रितेश प्रमाणिक, राजा कुमार, दिलीप कुमार, अमर मालाकार, निरंजन किशोर, शैलेश कुमार, राजेश कुमार, रवी जयसवाल सहित दर्जनों बाबा के भक्त शामिल थे।

## बिल्डिंग के छटे फ्लोर पर लगी आग, पाया गया काबू



रांची। राजधानी रांची के हरमू रोड स्थित एक बिल्डिंग के छटे फ्लोर पर रखे कागजात जल कर राख हल्लाक इस अगलगी को घटना में सफल पुराने कागजात जल कर राख हल्लाक है। बताया जाता है कि एक गलियारे में पुराने कागजात रखे हुए थे और उसी में आग लगी थी। हालांकि मौका रहते दमकल की टीम घटनास्थल पर पहुंची और 10 मिनट के अंदर आग पर काबू पा लिया गया।

## वीनिता कॉलेज ऑफ नर्सिंग का उद्घाटन 60 सीटों पर होगी नर्सिंग की पढ़ाई

खबर मन्त्र व्यूटो

रांची। खेलगांव चौक के बांधगाड़ी में विनीता कॉलेज ऑफ नर्सिंग की शुरूआत सोमावर को हुयी। उद्घाटन कार्यक्रम की निदेशक विनीता देवी ने किया। कॉलेज की प्राचार्य सपना चौधरी ने कहा कि 60 सीटों पर कॉलेज में जीएनएम की पढ़ाई होगी। झारखंड नर्सिंग काउंसिल से कॉलेज को मान्यता मिल गई है। कॉलेज में प्रैक्टिकल रूम के साथ सभी सुविधा उपलब्ध है। यहां से



पढ़ाई करने वाले छात्रों को पारस हॉस्पिटल में इंटरनशिप कराया जाएगा। निदेशक विनीता देवी, संरक्षक धर्मेद सिंह, दिलीप सिंह हैंमजेंट टीम के आकाश सिंह, चैनंद पटेल, प्राचार्य सपना चौधरी, वाइस प्रिंसिपल एंजेल प्रियांशी समेत अन्य मौजूद थे।

## सरला बिरला पब्लिक स्कूल के बच्चों ने की स्टेट म्यूजियम की यात्रा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। सरला बिरला पब्लिक स्कूल, रांची के छात्र-छात्राओं ने स्टेट म्यूजियम, खेलगांव की अनुभवात्मक यात्रा की। उन्होंने संग्रहालय में संरक्षित विभिन्न कलाकृतियों और अवशेषों को देखा। उन्हें झारखंड की आदिवासी संस्कृति के बारे में भी जानकारी दी गयी। उन्हें कला क्यूरेटर और पुरालेख जैसे अपरंपरागत व्यवसायों के बारे में जानकारी दी गई। सोहराई पेंटिंग बच्चों के आकर्षण का केंद्र थी, जिसकी



कला से बच्चे मंत्रमुग्ध थे। बच्चों ने विभिन्न कला रूपों और विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में जाना। विद्यालय के कार्मिक एवं प्रशासनिक प्रमुख डॉ. प्रदीप वर्मा ने इस तरह की यात्राएं आयोजित करने में स्कूल के प्रयासों की सराहना की।

प्राचार्या श्रीमती परमजीत कोर ने छात्रों को राज्य की समृद्ध विरासत के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे अधिक जागरूक नागरिक बन सकें।

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। नेताजी एकेडमी उच्च विद्यालय होचर, कांके रांची परिसर में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुरु पूजन का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रांची महानगर घोष प्रमुख सूरज पांडेय ने संबोधित करते हुए कहा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पवित्रता एवं शक्ति के प्रतीक भगवा ध्वज को अपना गुरु माना है। उन्होंने कहा किसी भी व्यक्ति में अवश्य कुछ कमी रह जाती है इसलिए जिसमें कोई कमी न हो, पवित्र हो, त्याग



की भावना रखता हो, बुराइयों को स्वयं समाप्त कर दें, ऐसे परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु के रूप में माना गया है। हिंदू धर्म में

प्रतिष्ठित भगवा ध्वज संदेव राष्ट्रभक्ति जागरण के मार्ग को प्रशस्त करती है। उन्होंने कहा भारतीय परंपरा में गुरु-शिष्य

## मुझे झारखंड में स्टार्टअप का पहला सर्टिफिकेट मिला है : शैलेंद्र जायसवाल

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। सोमवार को वाइल्ड वादी वाटर पार्क के संचालक शैलेंद्र जायसवाल ने प्रेस क्लब में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि मैंने झारखंड में एक नया स्टार्टअप शुरू किया है, जिसके अंतर्गत मैंने वाटर पार्क का निर्माण किया। वाटर पार्क खुलने के बाद मुझे जबरदस्त रिसर्चास मिला लोगों ने वाटर पार्क को बहुत पसंद किया। राज्य के कोने-कोने से लोग अपने परिवार मित्रों और साथियों के साथ यहां मनोरंजन करने आ रहे हैं। यहां आने वाले सभी ग्राहकों को टिकट की खरीदारी करने पर मिट्टी का चूल्हा गिफ्ट दिया जाएगा जिससे कि वह वाटर पार्क के अंदर ही पिकनिक का भी लुप्त उठा सके। मुझे यहां बिजनेस करते हुए समझ में आया कि झारखंड के युथ में इंटरनेट भरा हुआ है। वाइल्ड



प्रेस वार्ता करते संचालक शैलेंद्र जायसवाल

वादी पार्क का एक्सटेंशन कर रहे हैं और इसे झारखंड, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा के कई शहरों में खोलने का प्लान है। यहां आने वाले सभी ग्राहकों को टिकट की खरीदारी करने पर मिट्टी का चूल्हा गिफ्ट दिया जाएगा जिससे कि वह वाटर पार्क के अंदर ही पिकनिक का भी लुप्त उठा सके। मुझे यहां बिजनेस करते हुए समझ में आया कि झारखंड के युथ में इंटरनेट भरा हुआ है। वाइल्ड

वादी वाटर पार्क के अंदर लोगों के लिए तरह-तरह के मनोरंजन के साधन हैं जिसे और बढ़ाया जा रहा है। शैलेंद्र जायसवाल को 21 जुलाई 2023 को वियतनाम में झारखंड के इंटरनेटमेंट बिजनेस एक्सीलेंस अवार्ड के लिए सम्मानित किया जाएगा। मौके पर स्वाति कुमारी, आफताब आलम, अभिषेक श्रीवास्तव, जय एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

## रमेश सिंह ने गुरु पूर्णिमा पर पुरोहितों को किया सम्मानित



खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य बरिष्ठ नेता रमेश सिंह जी के द्वारा रांची के विभिन्न मंदिरों जैसे बिड़ला मैदान इंद्रपुरी स्थित मंदिर, सोबू चौक महावीर मंदिर, पहाड़ी मंदिर, संतोषी माता मंदिर, त्रिशक्ति मंदिर, शनि देव मंदिर, रातू रोड दुर्गा मंदिर, श्री साई मंदिर, महावीर मंदिर, गाड़िखान स्थित राम मंदिर एवं शनि देव मंदिर के पूज्य पुजारियों को बस्त्र एवं अंगवस्त्र

भेंट किया गया एवं विधिवत आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता मिंटू चौबे, सुखदेव नगर मण्डल भाजपा अध्यक्ष ओम प्रकाश पाण्डेय, निवर्तमान पार्षद अशोक यादव, भाजपा नेता नंदु अरोरा, बंटी शर्मा, सोनू दुबे, धर्मेद शर्मा, जीतेन्द्र पाण्डेय, हर्देद सिंह, राजेश चौधरी, मुरारी महरो, निशांत यादव, राजू चौधरी, दिलीप गुप्ता, संदीप राणा, सोनू सिंह, सोनू वर्मा, महेश महतो आदि पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद थे।

## मारवाड़ी युवा मंच ने किया कपड़ा वितरण



रांची। मारवाड़ी युवा मंच समर्पण शाखा ने सोमवार को पहाड़ी मंदिर परिसर में शाखा के सदस्यों के द्वारा वस्त्र का वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वस्त्रों का वितरण वहां मौजूद मजदूरों के बीच किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में जन सेवा प्रभारी सोभा अग्रवाल एवं संयोजिका कविता सोमानी ने किया। मौके पर स्वता भाला, सुमिता लाट, शुभा अग्रवाल, सुमिता अग्रवाल व अन्य मौजूद थे।

## अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस

रांची। आईक्यूएसी के तहत, 1/3 कंपनी सेंट जेवियर्स कॉलेज एनसीसी रांची ने अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस मनाने के लिए सोमवार को कपड़ा बैग वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम सुबह 11 बजे अलबर्ट एक्का चौक के पास शुरू हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए लोगों को प्लास्टिक बैग का उपयोग न करने और उनके स्थान पर कपड़े के बैग का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम के दौरान कुल 200 कपड़े के थैले वितरित किये गये। एनसीसी एएनओ लेफ्टिनेंट डॉ. प्रिया श्रीवास्तव को देखरेख में आयोजन सफल रहा।

## आर्ट ऑफ लिविंग परिवार अशोक नगर मंदिर हॉल में गुरु पूर्णिमा मनाएगा

रांची। रांची का आर्ट ऑफ लिविंग परिवार आज शाम 5:30 बजे से अशोक नगर मंदिर हॉल में बहुप्रतीक्षित गुरु पूर्णिमा समारोह मना रहा है। यह समारोह 40 गुरु पूजा पंडितों द्वारा गुरु पूजा के साथ शुरू होगा, जिनमें से अधिकांश आर्ट ऑफ लिविंग के शिक्षक हैं। रांची। इसके बाद कार्यक्रम में आर्ट ऑफ लिविंग के गायक मानस जी, सुमिता जी, शबनम जी और ऋषि जी द्वारा गाए गए भावपूर्ण भजन होंगे। सभी भक्तों और स्वयंसेवकों ने प्रतिभागियों की अच्छी अनुभूतियों के लिए बेहतरीन सजावट, संगीत प्रणाली आदि के साथ कार्यक्रम के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाई है।

## श्रीश्याम मंदिर में गुरु पूर्णिमा उत्सव आयोजित

रांची। हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में आज गुरु पूर्णिमा उत्सव आयोजित किया गया। श्री श्याम मित्र मंडल के पहले महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने बताया कि मंदिर के गर्भगृह में स्थापित भक्त शिरोमणि 1008 श्री आलू सिंह जी महाराज की प्रतिमा तथा गर्भगृह के बाहर उनके तैल चित्र का चंदन वंदन करके फूल माला अर्पित कर दीप प्रज्वलित करके भोग लगाया गया। गुरु पूजा अर्चना की गई। मण्डल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी के नेतृत्व में श्रवण दानदनिया श्याम सुन्दर शर्मा गौरव अग्रवाल मोनू ने गुरुदेव के सुभद्र भजनों का गायन किया। रात्रि 9:30 बजे महाप्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।















## सावन में महिलाएं क्यों पहनती हैं हरी चूड़ियां

हरे रंग को उपचार का रंग भी माना जाता है। हरा रंग हाइड्रोजन प्रेशर और हार्ट की कई बीमारियों के लिए अच्छा माना जाता है। सावन के महीने में बारिश के कारण पेड़-पौधे भी हरे-भरे हो जाते हैं। प्रकृति के इस बदलते रंग के साथ-साथ महिलाओं का श्रृंगार भी बदल जाता है। इस महीने में महिलाएं हरे रंग के वस्त्र और हरे रंग की चूड़ियां पहनती हैं।



कई ज्योतिषियों का कहना है कि इस महीने में हरे रंग के कपड़े पहनने से भाग्य प्रभावित होता है। इस महीने में हरे रंग के कपड़े पहनने से सोया हुआ भाग्य जाग जाता है। हरे रंग को सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। सावन के महीने में हरे रंग के वस्त्र और हरे रंग की चूड़ियों को पहनने का नियम प्राचीनकाल से चला आ रहा है। माना जाता है कि ऐसा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है।

माना जाता है कि जो लोग सावन के महीने में हरे रंग के कपड़े पहनते हैं, उनसे भोले बाबा खुश होते हैं। वहीं सावन के महीने में हरे रंग की चूड़ियां पहनने वाली महिलाओं पर भगवान विष्णु की कृपा बरसती है। कुछ ज्योतिषियों का मानना है कि हरा रंग प्रकृति से जुड़ा हुआ है, जिसके कारण इसका सीधा असर आपके भाग्य पर पड़ता है। सावन के महीने में महिलाओं का हरा रंग धारण करने से उनके सुहाग की सलामती का आशीर्वाद भी मिलता है।

इतना ही नहीं हरे रंग का संबंध बुद्ध ग्रह से भी होता है। ज्योतिषियों के मुताबिक जिन लोगों की कुंडली में बुध ग्रह कमजोर होता है, उन लोगों को हरे रंग के कपड़े पहनने के सलाह दी जाती है। बुध रंग का संबंध करियर और व्यापार से जुड़ा होता है। जब भी कोई हरा रंग धारण करता है तो बुध का बुरा प्रभाव कम होने लगता है और घर में संपन्नता आती है।

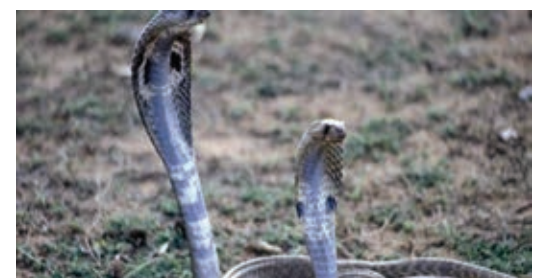
ज्योतिषियों के मुताबिक जिन शादीशुदा दंपतियों के जीवन में लड़ाई-झगड़ा या अनबन चल रही है, उनके बेडरूम के दक्षिण पूर्वी हिस्से में हरे रंग का पेंट करवा देना चाहिए। ऐसा करने से दंपती का जीवन खुशहाल हो जाएगा।

## सावन में नवविवाहिता क्यों चली जाती हैं मायके

हिंदू धर्म में सावन के महीने का काफी महत्व है। इस महीने में भगवान शिव की पूजा की जाती है। कहा जाता है कि इस महीने में भगवान शिव की पूजा करने वालों की मनोकामना पूरी होती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सावन के महीने में कुछ काम ऐसे होते हैं, जिन्हें करने की मनाही होती है। सावन के महीने में कई त्योहार आते हैं, जैसे की नाग पंचमी, तीज आदि। मान्यताओं के मुताबिक इस महीने में नवविवाहिताओं को अपने मायके में रहकर ही इन त्योहारों को मनाया चाहिए। सावन के महीने में खियों के अपने मायके जाकर त्योहार मनाने से उनके पति की आयु लंबी होती है तो वहीं उनका दंपत्य जीवन भी खुशहाल रहता है।

जानकारों के अनुसार सावन के महीने में शारीरिक संबंध नहीं बनाने चाहिए, ऐसा करने से सेहत पर विपरीत असर पड़ता है। आयुर्वेद भी इसे स्वीकार करता है। आयुर्वेद के अनुसार सावन के महीने में व्यक्ति के अंदर रस का संचार ज्यादा होता है। रक्त का संचार बढ़ने की वजह से शारीरिक संबंध बनाने की भावना बढ़ती है। विशेषज्ञों का कहना है कि सावन के महीने में गर्भ ठहरने के कारण होने वाली संतान मानसिक और शारीरिक रूप से कमजोर होने की ज्यादा संभावनाएं होती हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में त्योहारों की ऐसी परंपरा बनाई गई है, जिससे इस महीने में नवविवाहित खियों अपने मायके जा सकें और उनके होने वाले बच्चे को किसी तरह की कोई बीमारी न हो। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव को काम का शत्रु माना जाता है। पौराणिक कथा के मुताबिक एक बार सावन के महीने में कामदेव ने भगवान शिवजी पर बाण चलाया था, जिससे शिवजी को गुस्सा आ गया और कामदेव को भस्म कर

## सांप दिखना शुभ है या अशुभ



सांप एक ऐसा जीव है जिसे शास्त्रों में पूजनीय बताया गया है। भगवान महादेव भी सर्प को एक आभूषण के रूप में स्वीकार करते हैं। जो लोग इस पर विश्वास करते हैं वो इससे जुड़े शकुन और अपशकुन को भी मानते हैं। शास्त्रों में सांपों को लेकर बताए गए शकुन और अपशकुन इस प्रकार हैं-

- यदि शिवलिंग पर सांप लिपटा हुआ दिखाई दे तो यह भी बहुत शुभ शकुन होता है। ऐसा होने पर व्यक्ति को भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।
- किसी मंदिर में सांप दिखना भी शुभ माना जाता है। ऐसा होने पर व्यक्ति की मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण होती हैं।
- मरा हुआ सांप दिखना अशुभ माना जाता है। अतः यदि कहीं मरा हुआ सांप दिखाई दे तो भगवान शिव से क्षमा याचना करनी चाहिए और शिवलिंग पर जल, कच्चा दूध चढ़ाएं।
- किसी आवश्यक कार्य पर जाते समय कोई सांप आपके सीधे हाथ की ओर से रास्ता काट दे तो यह शुभ शकुन माना जाता है। ऐसा होने पर कार्य में सफलता मिलने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।
- यदि किसी व्यक्ति को नाग-नागिन प्रणय करते देखे तो इस अशुभ माना जाता है। ऐसे में व्यक्ति को नाग-नागिन के सामने रुकना नहीं चाहिए। यदि उनके प्रेम में विघ्न पड़ता है तो यह व्यक्ति के लिए खतरनाक हो सकता है। अतः ऐसे स्थान से तुरंत चले जाना चाहिए।
- नाग-नागिन से किसी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए।
- यदि बाएं हाथ की ओर से कोई सांप आपका रास्ता काट दे तो आपको सावधान होकर कार्य करना चाहिए। ऐसा होने पर कार्यों में असफलता के योग बनते हैं।
- यदि कोई व्यक्ति सफेद सांप देखता है तो यह शुभ माना जाता है। ऐसा होने पर व्यक्ति को सफलता मिलती है।



# पवित्र श्रावण माह में शिव का आशीर्वाद पाते कांवरिया

## 10वीं सदी के शिव मंदिर में अनुष्ठान करने से संतान प्राप्ति की मान्यता

जगदलपुर(छत्तीसगढ़) के बीजापुर मार्ग पर गीदम से करीब नौ किमी दूर गुमरगुण्डा चौक से पंच किमी दूर सघन वन क्षेत्र में स्थापित है समलूर का करीब नौ सौ साल पुराना शिवालय। दंतेवाड़ा से बिजाम होकर भी यहां पहुंचा जा सकता है। इस शिवालय का निर्माण 11वीं शताब्दी में काकतीय नरेशों ने करवाया था। विशाल तालाब किनारे स्थित इस शिवालय की शिवलिंग और जलहरी बारसूर के बत्तीसा मंदिर की तरह ही है। आमतौर पर शिवालयों में नंदी की प्रतिमाएं गर्भगृह के बाहर रहती हैं परन्तु समलूर में यह प्रतिमा मंदिर के भीतर ही है। इस शिवालय से कुछ दूरी पर वनांचल में ही एक दुर्लभ देवी प्रतिमा है। जहां नवरात्रि पर भक्त मनोकामना ज्योति कलश प्रज्वलित कराते हैं। यह शिवालय छग पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।

सावन में भूलकर भी शिवलिंग पर हल्दी न चढ़ावें कहा जाता है कि सावन के महीने में भगवान शिवजी की पूजा करने से वो खुश होते हैं और उनकी पूजा करने वाले भक्तों के सारे दुख दूर हो जाते हैं। लेकिन

लिपे लाभदायक माना जाता हो लेकिन सावन के महीने में हरी सब्जी खाने से मना किया जाता है। सावन के महीने में प्याज, मांस, मीठिया और लहसुन का सेवन नहीं करना चाहिए। सावन

खाना-खाना चाहिए। शाखाओं में कहा गया है कि सावन के महीने में दूध का सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि इस महीने में दूध का सेवन सेहत के लिए अच्छा नहीं माना जाता है। वहीं इस महीने में शिवलिंग पर दूध



इस महीने में कुछ काम ऐसे भी हैं, जिन्हें करने से भगवान शिवजी नाराज होते हैं। कहा जाता है कि हल्दी का प्रयोग सिर्फ माता पार्वती पर किया जाता है। सावन के महीने में बैंगन खाना भी अशुभ माना जाता है। क्योंकि बैंगन को शाखाओं में अशुभ माना जाता है। भले ही हरी सब्जियों को हमारे स्वास्थ्य के

के महीने में इन सब चीजों के खान-पान को पाप माना जाता है। सावन के महीने में व्रती को हरी सब्जियां नहीं खानी चाहिए। सावन के महीने में सुबह जल्दी उठ जाना चाहिए। इस महीने में जल्दी उठ जाना सेहत के लिए अच्छा माना जाता है। सावन के महीने में शरीर पर तेल नहीं लगाना चाहिए। न ही इस महीने में कांसे के बर्तन में

चढ़ाना शुभ माना जाता है। ज्योतिषियों का कहना है कि इस महीने में रोज शिवलिंग पर जलाभिषेक करने से पिछले कई सालों में पापों से मुक्ति मिलती है। सावन के महीने में शिव भक्तों का अपमान नहीं करना चाहिए। इस महीने में शिव भक्तों को सम्मान देने से भगवान शिवजी खुश होते हैं।

सावन के महीने में भक्त भगवान शिवजी को खुश करने के लिए अलग-अलग तरीकों से उनकी पूजा करते हैं। इन्हीं तरीकों में से एक है कांवर लाना। सावन के महीने में भगवान भोलेनाथ के भक्त केसरिया रंग के कपड़े पहनकर कांवर लाते हैं, इसमें गंगा जल होता है। इन्हीं भक्तों को कांवरिया कहा जाता है। कांवर को सावन के महीने में ही लाया जाता है। कांवर को सावन के महीने में लाने के पीछे की मान्यता है कि इस महीने में समुद्र

पहले देवताओं ने उन पर जल चढ़ाया तो वहीं उसके बाद भगवान शिवजी के भक्त उन पर जल चढ़ाने लग गए। कांवर के बारे में कुछ ज्योतिषियों का कहना है कि सबसे पहले भगवान परशुराम ने कांवर से गंगा का पवित्र जल भगवान शिवजी पर चढ़ाया था। तभी से भगवान शिवजी पर सावन के महीने में जल चढ़ाने की परंपरा शुरू हो गई। सावन के महीने में क्यों लाई जाती हैं कांवर : कांवर लाने के बारे में कुछ विद्वानों का कहना है कि



मंथन के दौरान विष मंथन से निकले निकला था, दुनिया को बचाने के लिए भगवान शिव ने इस विष का सेवन कर लिया था। विष का सेवन करने के कारण भगवान शिव का शरीर जलने लगा। भगवान शिव के शरीर को जलता देख देवताओं ने उन पर जल अर्पित करना शुरू कर दिया। जल अर्पित करने के कारण भगवान शिवजी का शरीर ठंडा हो गया और उन्हें विष से राहत मिली। उसके बाद से ही सावन के महीने में भगवान शिव जी पर जल चढ़ाया जाता है।

मंथन से निकले विष को पीने के कारण भगवान शिवजी का गला नीला हो गया था, जिसके कारण वे नीलकंठ कहलाए। विष के कारण उनके शरीर पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ गए थे। नकारात्मक प्रभावों से मुक्ति दिलाने के लिए उनके भक्त रावण ने काफ़ी पूजा-पाठ की और कांवर में जल भरकर शिवमंदिर में चढ़ाया। जिसकी वजह से शिव जी सभी नकारात्मक प्रभावों से मुक्त हो गए। तभी से कांवर यात्रा की शुरुआत हुई।

## मंदिर में हमेशा जलती रहती है ज्योति

# रुद्रप्रयाग में हुआ था शिव-पार्वती का विवाह



त्रियुगीनारायण मंदिर के बारे में वेदों में उल्लेख भी मिलता है कि यह मंदिर त्रेतायुग से स्थापित है। माता पार्वती और भगवान शिवजी के विवाह के बारे में कई पौराणिक कथाएं हैं। ऐसी ही एक कथा उत्तराखण्ड के रुद्रप्रयाग जिले के त्रियुगीनारायण नाम के मंदिर से जुड़ी हुई है। इस मंदिर में एक ज्योति हमेशा जलती रहती है। स्थानीय मान्यता के मुताबिक इस अग्नि के सामने ही भगवान शिवजी और माता पार्वती ने फेरे

लिए थे। मंदिर में जलने वाली इस ज्योति के बारे में कहा जाता है कि यह त्रेतायुग से स्थापित है। यह ज्योति कभी बंद नहीं होती है। मंदिर के बारे में मान्यता है कि यहां शादी करने से दंपत्य जीवन सुखी रहता है। हर साल यहां हजारों की संख्या में शादियां होती हैं। यहां दूर-दूर से कई जोड़े शादी करने के लिए आते हैं। भगवान शिवजी और माता पार्वती का ये मंदिर रुद्रप्रयाग जिले के एक सीमांत गांव में स्थित है। इस मंदिर का नाम

त्रियुगीनारायण मंदिर है। इस मंदिर को आस्था का केंद्र माना जाता है। त्रियुगीनारायण मंदिर के बारे में वेदों में उल्लेख भी मिलता है कि यह मंदिर त्रेतायुग से स्थापित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार माता पार्वती का सती के रूप में पुनर्जन्म हुआ था। जन्म के बाद वो भगवान शिवजी की पूजा करने लगीं और अपनी पूजा से शिवजी का मन जीत लिया। माता पार्वती ने यह पूजा

त्रियुगीनारायण के करीब पांच किलोमीटर दूर गौरीकुंड में की थी। इसके बाद दोनों का त्रियुगीनारायण गांव में विवाह संपन्न हुआ। केदारनाथ धाम रुद्रप्रयाग जिले (उत्तराखण्ड) में स्थित है। त्रियुगीनारायण का मंदिर केदारनाथ से 19-20 किलोमीटर पहले गंगोत्री, बूढ़ाकेदार, सोनप्रयाग के रास्ते में पड़ता है। हर साल इसे मई से अक्टूबर महीने के बीच में आम दर्शनार्थियों के लिए खोला जाता है।

## जानिये धार्मिक और वैज्ञानिक कारण

# शिवलिंग पर क्यों चढ़ाया जाता है दूध



सावन का महीना चल रहा है और इस महीने को भगवान शिवजी का प्रिय महीना माना जाता है। शाखाओं के अनुसार भगवान शिवजी को खुश करने के लिए उनके भक्त सावन के महीने में कई तरह की पूजा पाठ करते हैं। उन्हें से एक है सावन के महीने में शिवलिंग पर दूध चढ़ाना। शिवलिंग पर दूध चढ़ाने के पीछे कई धार्मिक मान्यताएं हैं। क्या है धार्मिक मान्यता: विष्णुपुराण के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान विष की उत्पत्ति हुई। ये

विष दुनिया को समाप्त कर सकता था। दुनिया को बचाने के लिए भगवान शिवजी ने इसे पी लिया, जिससे उनका शरीर जलने लगा। उनके शरीर को जलता देख कई देवताओं ने उन पर पानी डालना शुरू कर दिया। लेकिन कोई ज्यादा असर नहीं पड़ा। तभी सभी देवताओं ने उनसे दूध ग्रहण करने का निवेदन किया। दूध पीने से विष का असर कम हो गया। और उनका शरीर जलने से बच गया। तभी से शिवजी को दूध बहुत प्रिय है। यही कारण है कि भगवान शिवजी को खुश करने के लिए

सबसे ज्यादा उत्पन्न होती है। सावन के महीने में ऋतु परिवर्तन होता है, जिसके कारण शरीर में वात परिवर्तन की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। यही कारण है कि सावन के महीने में शिव को दूध अर्पित करने की प्रथा बनाई है। ज्योतिषियों की माने तो सावन के महीने में शमीवृक्ष के फूल और पत्ते शिवलिंग पर चढ़ाने से चंचल मन वाले व्यक्ति के मन में स्थिरता आती है। साथ ही ऐसा करने वाला व्यक्ति का अधिकारी भी बन जाता है।









